International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 81-82

नवगीत के भगीरथ : उमाकांत मालवीय

डॉली महेश नागर
नेट, स्लेट, एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल. (हिन्दी) शासकीय कन्या उत्कृष्ट महाविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

'मेंहदी और महावर' के गीतों से अपनी यशस्वी काव्य यात्रा शुरु करने वाले कवि, चिन्तक, ललित निबन्धकार स्व. उमाकांत मालवीय काव्य मूल्य और सामाजिक चिन्तनों के प्रासंगिक रचनाकार है। 'मेंहदी और महावर' से 'सुबह रक्त पलाश' की उनकी काव्य यात्रा हिन्दी नवगीत की ही जय यात्रा नहीं वरन् भारतीय कविता की भी जय यात्रा है। 'मेंहदी और महावर' में उनकी निजी रागात्मकता तथा सांस्कृतिक सरोकारों से सम्पन्न गीत है। कवि केवल निजी अनुभूतियों का ही गायक नहीं होता। वह एक व्यक्ति होने के अतिरिक्त व्यापक सामाजिक परिदृश्य का एक अंग होता है। उनकी सामाजिक, राष्ट्रीय तथा अन्यान्य रचनात्मक प्रतिबद्धताओं की प्रतीक है 'सुबह रक्त पलाश' की रचनायें।

15 अगस्त सन् 1947 की आजादी के साथ ही साथ इस देश के आम आदमी के बेहतर भविष्य के कुछ अत्यन्त सुखद स्वप्न भी मिले थे लेकिन उन्हें लोग लम्बे समय तक जीवित नहीं रख सके। हम बड़ी जल्दी स्वप्न भंग की त्रासद स्थितियों में ढकेल दिए गए। लोग अपने स्वप्नों के शव अपने कंधों पर ढोने के लिये अभिशप्त हो गये। आजादी के बाद चिन्तन और व्यवहार में लगातार गिरावटें पूर्ण बदलाव की ओर संकेत करते हुए 'सुबह रक्त पलाश की' भूमिका में श्री मालवीय ने लिखा है "विद्रोह की दिशा बदल गयी है कब मीरा राजमहल से सड़क पर आ गई थी, आज सड़क से राष्ट्रपति भवन में पहुँचने के लिये क्यों लगी हुई है, यही कारण है कि अपने समय में चारण कहे जाने वाले अकेले भूषण ने जो कर दिया वह आज पद्यभूषणों की पलटन भी नहीं कर पा रही है। सारा का सारा विद्रोह एक हद तक अदद सरकारी अफसरी, सेवाश्रयी प्रतिष्ठान, पद, पुरस्कार, अकादमी, समितियों की सदस्यता प्राप्ति पर छीज जाता है।" इसी लिप्साजन्य एकाधिकार की ओर संकेत करते हुए उन्होंने अपने एक गीत में लिखा है –

थोड़े से लोगों की जायदाद देश है
थोड़े से लोगों की राष्ट्र है
भारत के माने है केवल कौरव सभा
बहुमत का मतलब धृतराष्ट्र
बलिपथ के राहगीर चुपके से हाय रे
पेंशन की गलियों में मुड़ गये।

इन पंक्तियों में अर्थहीन आक्रोश नहीं बल्कि करुणापूर्ण व्यंग्य और क्षोभ है। 'सुबह रक्त पलाश' की रचनायें अपने समय में संवेदनशील व्यक्तित्व की चिंताओं, मोहभंग, संघर्ष और जिजीविषा की रचनात्मक दस्तावेज है। ऐसा दस्तावेज जो अपने समय के लोगों की अपेक्षा आने वाले समय के लोगों के लिये अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। भविष्य को आज के वर्तमान का यह अवदान किसी सम्मोहन भरे स्वप्न की जगह कड़वाहट का आस्वादन ही करायेगा लेकिन जो वर्तमान झेल रहा है। उसे जो सौंपा गया है वही तो वह भविष्य को दे सकेगा। आने वाली पीढ़ियाँ अपने लिये एक बेहतर स्थितियों की तलाश कर सकें इसके लिये भी यह जरूरी है और अपनी इस जिम्मेदारी को निभाते हुए एक गीत में उन्होंने लिखा है –

कुहरे पर लिखे हुए कुछ दस्तावेज
लकवा मारे मन के शंकित परहेज
यही उत्तराधिकार मिला यही देंगे।

मालवीय जी के गीत अपने समय के व्यापक राजनीतिक छल की ओर न केवल संकेत करते है वरन् वे उस क्षण पर जोरदार प्रहार भी करती है। नितान्त दमघोटू त्रासद स्थितियों के बावजूद वे जिजीविषा की कमर नहीं झुकने देते और स्वाभिमानपूर्ण स्फीति के साथ कह उठते है –

एक आदिम अवज्ञा का ध्वज लिए आदम
कौन था ? कुछ याद तुमको ? सिर्फ थे तुम हम।
व्यवस्थाओं ने हमें दी हथकड़ी बेड़ी
मुक्ति की शर्त पहली भौंह ही टेढ़ी
चलों हर राह पर उड़ाये अवज्ञा परचम।

ऐसे साहसपूर्ण अवज्ञा दर्शन की बात केवल वही कर सकता है जिसने मानवीय अस्मिता के इतिहासों को खंगाल कर निष्कर्षों का मोती प्राप्त कर लिया हो। व्यवस्था और सत्ता के सामने घुटने टेक कर हम किस तरह बैठ जाते है वह हमारी परम्परा नहीं है। अपनी उज्जवल परम्परा का पुर्नस्मरण करते हुए वे लिखते है –

सूर्य कभी कौड़ी का तीन नहीं होगा।
जन्म से मिली जिसको कठिन अग्नि दीक्षा
उसको क्या है संकट, चुनौती, परीक्षा
सोना तो सोना है टीन नहीं होगा।

यह किसी तरह का व्यक्तिवादी दर्द नहीं है। यह तो जातीय स्वाभिमान से उपजी मानवीयता की पहचान है। ऐसे मानवीय मूल्य निष्ठा उनकी जय यात्रा को निरन्तर आगे बढ़ती रही है।

अक्टोविया पॉज यह मानते है कि कविता एक ऐसा खाद्य है जैसे बुर्जुआ लोगों ने गरिष्ठ बना दिया है। उमाकांत इस गरिष्ठता के छद्म को भी तोड़ते है और कविता को आम आदमी तक ले जाते है। हर रचनाकार न केवल अपने समय के पाठकों को ध्यान में रखकर लिखता है वरन् वह किसी हद तक अपनी रचना के आस्वादन के लिए नए पाठक भी बनाता है। इसीलिए कहा गया है कि रचनाकार सिर्फ समाज द्वारा प्रभाव ही ग्रहण नहीं करता बल्कि वह उसे भी प्रभावित करता है जिस तरह कला सिर्फ जीवन का

चित्रण ही नहीं करती बल्कि उसे बनाती सँवारती भी है। उमाकांत मालवीय अपने रचनात्मकता के माध्यम से यह सारा कार्य करते है। उमाकांत मालवीय ने 'सुबह रक्त पलाश' की रचनाओं के माध्यम से काफी कुछ अर्थों में गीत की पुरानी परिभाषाओं की घेरे बंदी को तोड़ा है और नये गीतों के नये सौन्दर्य की सृष्टि की है। गीत की भाषा के क्षेत्र में उनका अवदान अपने बहुत से अंग्रेजों तथा समकालीनों से अलग और काफी महत्वपूर्ण है। उमाकांत मालवीय ने हिन्दी नये गीतों को सर्वथा नई भाषा दी है। इस दृष्टि से उनका अवदान सर्वथा अलग और विशिष्ट है। उन्होंने बहुत से ऐसे शब्दों का अपने गीतों में प्रयोग किया है जो गीतेतर ठहराये जा सकते है। इस दृष्टि से उन्होंने गीतों को दरबार से निकालकर एक सामान्य जन का पौरुषेय व्यक्तित्व दिया है। उन्होंने रंगमंच से युद्ध के मोर्चों तक से शब्द उठाये है अपने गीत के लिये।

केवल भाषा ही नहीं बल्कि छंद के स्तर पर भी मालवीय जी ने 'मेंहदी और महावर' के गीतों में एक सार्थक किन्तु नये प्रस्थान के संकेत इस संकलन में दिये है। मात्रा और वर्ण गिनकर शुद्ध कविता का रुढ़िवादी शव ढोने वाले लोगों को 'सुबह रक्त पलाश' संकलन की रचनाओं में दोष ही दोष नजर आएँगे। किन्तु नये मनुष्य के लिए ये गीत एक सुखद संतुष्टि देंगे। गीत की नियति मात्र गाने, गुनगुनाने तक ही सीमित नहीं की जा सकती बल्कि उसमें गुनने के लिए भी कुछ होना चाहिये और इस दृष्टि से गीत विरल कोटि की सम्पन्नता से लैस है। ये रचनायें मात्र उत्तेजित ही नहीं वरन् सक्रिय भी करती है। रचनाकार अपनी प्रतिबद्धतायें और पक्षधरता घोषित करते हुए कहता है –

ना तो सतर का हूँ ना ही कंगारो का
जो सर उठाए है उन देवदारों का
ना लोक का हामी ना हूँ शिविर स्वामी
ना हाट का हूँ मैं ना बोल नीलामी
ना दर्प दर्शन का थोथे विचारों का
जो राह पर मिलती उन जीतों हारों का

'सुबह रक्त पलाश की' नवगीत की एक उपलब्धि है। वह नये पाठको और नये गीतकवियों दोनों की अपनी कृति कही जा सकती है।

संदर्भ

1. उमाकांत मालवीय – मेहंदी और महावर
2. उमाकांत मालवीय – सुबह रक्त पलाश की